

ब्रज श्रीवास्तव की कविताओं में व्यक्ति-चेतना और सामाजिक सरोकारों का अंतर्संबंध**पर्वत सिंह साहू**शोधार्थी, जीवाजी विश्वविद्यालय,
ग्वालियर, म. प्र.**डॉ. पद्मा शर्मा**मार्गदर्शक, प्राध्यापक, हिन्दी
शासकीय एम. एल. बी. उत्कृष्ट
महाविद्यालय ग्वालियर, म. प्र.**Paper Received date**

05/11/2025

Paper date Publishing Date

10/11/2025

DOI<https://doi.org/10.5281/zenodo.20482444>**IMPACT FACTOR****5.924****सारांश (Abstract)**

प्रस्तुत शोध-पत्र समकालीन हिंदी कविता के महत्त्वपूर्ण कवि ब्रज श्रीवास्तव (जन्म: सितंबर 1966, विदिशा, मध्य प्रदेश) की कविताओं में निहित व्यक्ति-चेतना और सामाजिक सरोकारों के अंतर्संबंध का आलोचनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है। समकालीन सामाजिक परिवेश में व्यक्ति अनेक प्रकार के मानसिक, आर्थिक और सामाजिक दबावों से घिरा हुआ है, जिसका प्रभाव उसकी चेतना, संवेदना और जीवन-दृष्टि पर स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। ब्रज श्रीवास्तव की कविताएँ इस संदर्भ में व्यक्ति की आंतरिक अनुभूतियों को सामाजिक यथार्थ से जोड़ते हुए एक सशक्त काव्यात्मक अभिव्यक्ति प्रदान करती हैं।

इस अध्ययन का उद्देश्य यह स्पष्ट करना है कि कवि की व्यक्ति-चेतना आत्मकेंद्रित न होकर सामाजिक संरचनाओं, मध्यवर्गीय जीवन-संघर्ष, सत्ता-संरचना, नैतिक द्वंद्व और मानवीय संबंधों के विघटन से निर्मित होती है। शोध-पत्र में वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक पद्धति के माध्यम से यह प्रतिपादित किया गया है कि ब्रज श्रीवास्तव की कविताओं में व्यक्ति और समाज परस्पर विरोधी न होकर एक-दूसरे के पूरक रूप में उपस्थित हैं। निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि उनकी कविताएँ समकालीन हिंदी कविता में मानवीय संवेदना, सामाजिक चेतना और वैचारिक प्रतिबद्धता को संतुलित रूप में प्रस्तुत करती हैं।



International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

बीज-शब्द (Keywords) : ब्रज श्रीवास्तव, समकालीन हिंदी कविता, व्यक्ति-चेतना, सामाजिक सरोकार, मध्यवर्ग, संवेदना, सामाजिक यथार्थ

प्रस्तावना

समकालीन हिंदी कविता भारतीय समाज के बदलते स्वरूप, जीवन-मूल्यों में आए परिवर्तन तथा व्यक्ति की जटिल मानसिक संरचना की सशक्त अभिव्यक्ति है। स्वतंत्रता के पश्चात् सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक क्षेत्रों में आए व्यापक परिवर्तनों ने व्यक्ति के जीवन को गहरे स्तर पर प्रभावित किया है। औद्योगीकरण, शहरीकरण, वैश्वीकरण और उपभोक्तावादी संस्कृति के विस्तार ने व्यक्ति के सामने नई चुनौतियाँ और नए संकट उपस्थित किए हैं। इन परिस्थितियों में व्यक्ति की चेतना केवल निजी अनुभवों तक सीमित न रहकर सामाजिक यथार्थ से निरंतर संवाद करती हुई विकसित होती है। ब्रज श्रीवास्तव समकालीन हिंदी कविता के ऐसे कवि हैं जिनकी रचनाओं में व्यक्ति और समाज के बीच गहरा अंतर्संबंध दृष्टिगोचर होता है। उनकी कविताओं में व्यक्ति अपनी अस्मिता, पीड़ा, अकेलेपन और संघर्ष के माध्यम से सामाजिक संरचनाओं पर प्रश्न खड़े करता है। इस प्रकार उनकी कविता व्यक्ति की निजी अनुभूति को सामाजिक चेतना में रूपांतरित करती हुई दिखाई देती है। प्रस्तुत शोध-पत्र इसी अंतर्संबंध के विविध आयामों का विश्लेषण करने का प्रयास है।

अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत शोध-पत्र के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं—

1. ब्रज श्रीवास्तव की कविताओं में व्यक्ति-चेतना के स्वरूप का विश्लेषण करना।
2. कवि की रचनाओं में अभिव्यक्त सामाजिक सरोकारों की पहचान करना।
3. व्यक्ति-चेतना और सामाजिक यथार्थ के बीच स्थापित अंतर्संबंध को स्पष्ट करना।
4. समकालीन हिंदी कविता के संदर्भ में ब्रज श्रीवास्तव के काव्य-योगदान का मूल्यांकन करना।

5. यह प्रतिपादित करना कि ब्रज श्रीवास्तव की कविताएँ किस प्रकार समकालीन समाज की संवेदनशील अभिव्यक्ति हैं।

शोध पद्धति

प्रस्तुत शोध-पत्र में वर्णनात्मक, विश्लेषणात्मक तथा व्याख्यात्मक शोध-पद्धति को अपनाया गया है। अध्ययन के लिए ब्रज श्रीवास्तव की प्रकाशित कविता-संग्रहों एवं चयनित कविताओं को प्राथमिक स्रोत के रूप में ग्रहण किया गया है। इसके अतिरिक्त समकालीन हिंदी कविता पर उपलब्ध आलोचनात्मक ग्रंथों, शोध-पत्रों और संदर्भ पुस्तकों को द्वितीयक स्रोत के रूप में उपयोग किया गया है। व्यक्ति-चेतना और सामाजिक सरोकारों के विश्लेषण हेतु पाठ-विश्लेषण पद्धति का सहारा लिया गया है, जिससे कविताओं के अंतर्निहित भावार्थ और सामाजिक संदर्भ स्पष्ट किए जा सकें।

ब्रज श्रीवास्तव की कविताओं में व्यक्ति-चेतना का स्वरूप

ब्रज श्रीवास्तव की कविताओं में व्यक्ति-चेतना आधुनिक मनुष्य की जटिल मानसिक संरचना को गहराई से अभिव्यक्त करती है। यहाँ व्यक्ति केवल निजी अनुभूतियों में लिप्त दिखाई नहीं देता, बल्कि वह अपने समय, समाज और परिस्थितियों के प्रति सजग चेतना के साथ उपस्थित होता है। कवि का व्यक्ति अकेलेपन, असुरक्षा, विफलताओं और अस्तित्वगत प्रश्नों से घिरा हुआ है, किंतु वह आत्मदया में नहीं डूबता। उसकी चेतना निरंतर प्रश्नाकुल बनी रहती है। यह प्रश्नाकुलता व्यक्ति को आत्मविश्लेषण की ओर ले जाती है और अंततः सामाजिक यथार्थ से जोड़ देती है। इस प्रकार व्यक्ति-चेतना आत्मकेंद्रित न होकर समाजोन्मुख और यथार्थबोध से संपन्न हो जाती है।

व्यक्ति-चेतना का दार्शनिक आधार : ब्रज श्रीवास्तव की कविताओं में व्यक्ति-चेतना का संबंध आधुनिक दार्शनिक चिंतन, विशेषतः अस्तित्ववाद और मानवतावाद से जोड़ा जा सकता है। उनकी कविताओं में व्यक्ति अपने अस्तित्व के अर्थ, जीवन की सार्थकता और सामाजिक भूमिकाओं पर प्रश्न करता है। यह चेतना नियति-स्वीकृति के बजाय संघर्ष और प्रतिरोध की चेतना है। व्यक्ति अपने सीमित अस्तित्व के भीतर रहकर भी सामाजिक अन्याय और अमानवीय परिस्थितियों के विरुद्ध मानसिक प्रतिरोध करता है। यही दार्शनिक आधार कवि की व्यक्ति-चेतना को गहराई और गंभीरता प्रदान करता है।

सामाजिक सरोकारों की व्यापक अभिव्यक्ति

ब्रज श्रीवास्तव की कविताओं में सामाजिक सरोकार बहुआयामी रूप में सामने आते हैं। इनमें आर्थिक असमानता, बेरोज़गारी, गरीबी, पारिवारिक विघटन, नैतिक मूल्यों का क्षरण, संवेदनहीनता और उपभोक्तावादी मानसिकता प्रमुख हैं। कवि इन समस्याओं को किसी वैचारिक घोषणा या नारेबाज़ी के रूप में प्रस्तुत नहीं करता, बल्कि जीवन की सहज परिस्थितियों और अनुभवों के माध्यम से उजागर करता है। इससे कविता अधिक विश्वसनीय और प्रभावशाली बन जाती है। सामाजिक सरोकार कविता में मानवीय संवेदना के साथ घुल-मिलकर उपस्थित होते हैं।

व्यक्ति और समाज का द्वंद्वत्मक अंतर्संबंध : ब्रज श्रीवास्तव की कविता में व्यक्ति और समाज का संबंध द्वंद्वत्मक है। व्यक्ति समाज से संघर्ष करता है, उसकी विसंगतियों से टकराता है, किंतु समाज से अलग होकर उसका अस्तित्व संभव नहीं है। व्यक्ति की पीड़ा सामाजिक संरचना की देन है और सामाजिक विडंबनाएँ व्यक्ति की चेतना में प्रतिबिंबित होती हैं। यह द्वंद्व कविता को वैचारिक गहराई प्रदान करता है। कवि यह स्पष्ट करता है कि व्यक्ति और समाज एक-दूसरे के विरोधी नहीं, बल्कि एक-दूसरे से निर्मित और प्रभावित हैं।

मध्यवर्गीय जीवन-संघर्ष और वैश्वीकरण : ब्रज श्रीवास्तव की कविताओं में मध्यवर्गीय जीवन का यथार्थ अत्यंत प्रामाणिक रूप में चित्रित हुआ है। वैश्वीकरण और उपभोक्तावाद ने मध्यवर्ग की आकांक्षाओं को तीव्र किया है, किंतु संसाधनों की सीमाएँ उसे निरंतर तनाव और असंतोष की स्थिति में रखती हैं। कवि इस द्वंद्व को व्यक्ति-चेतना के माध्यम से प्रस्तुत करता है। आर्थिक दबाव, सामाजिक अपेक्षाएँ और नैतिक संकट मध्यवर्गीय व्यक्ति की चेतना को प्रभावित करते हैं, जिससे कविता समकालीन समाज का सजीव दस्तावेज़ बन जाती है।

सत्ता, व्यवस्था और व्यक्ति-चेतना : समकालीन समाज में सत्ता और व्यवस्था व्यक्ति के जीवन को नियंत्रित करती हैं। ब्रज श्रीवास्तव की कविताओं में सत्ता का चित्रण प्रत्यक्ष न होकर संकेतात्मक और व्यंजक है। व्यवस्था की कठोरता व्यक्ति की स्वतंत्रता, अस्मिता और संवेदना को सीमित करती है। कवि इन परिस्थितियों



International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

को उजागर करते हुए व्यक्ति की मौन प्रतिक्रिया, असंतोष और प्रश्नाकुलता को महत्व देता है। यह प्रश्नाकुलता कविता को सामाजिक चेतना से जोड़ती है और उसे प्रतिरोध का स्वर प्रदान करती है।

संवेदना, नैतिक संकट और सामाजिक विस्तार : ब्रज श्रीवास्तव की कविता की मूल शक्ति उसकी संवेदनशीलता है। व्यक्ति की निजी पीड़ा सामाजिक पीड़ा में रूपांतरित हो जाती है। नैतिक मूल्यों का क्षरण, मानवीय संबंधों की टूटन और संवेदनहीनता कवि की चिंता के केंद्र में हैं। उनकी कविताएँ पाठक को केवल सहानुभूति तक सीमित नहीं रखतीं, बल्कि सामाजिक उत्तरदायित्व और आत्मचिंतन के लिए प्रेरित करती हैं। इस प्रकार संवेदना का सामाजिक विस्तार कविता को व्यापक मानवीय आयाम प्रदान करता है।

भाषा और शिल्प : ब्रज श्रीवास्तव की काव्य-भाषा सरल, सहज और संवादात्मक है। यह भाषा व्यक्ति की आंतरिक अनुभूतियों को सटीकता के साथ अभिव्यक्त करती है और सामाजिक यथार्थ को भी उद्घाटित करती है। अलंकरण या शिल्प-प्रदर्शन के स्थान पर अर्थ की सघनता दिखाई देती है। प्रतीकों और बिंबों का संयमित प्रयोग कविता को बहुस्तरीय अर्थ प्रदान करता है, जिससे व्यक्ति-चेतना और सामाजिक सरोकारों का अंतर्संबंध अधिक प्रभावी रूप में सामने आता है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि ब्रज श्रीवास्तव की कविताओं में व्यक्ति-चेतना और सामाजिक सरोकारों का गहरा, सजीव और अविच्छिन्न संबंध है। कवि व्यक्ति की निजी अनुभूतियों को सामाजिक यथार्थ से जोड़कर कविता को व्यापक मानवीय संदर्भ प्रदान करता है। उनकी व्यक्ति-चेतना आत्मकेंद्रित न होकर समाजोन्मुख है, जिसमें समय, व्यवस्था और सामाजिक संरचनाओं के प्रति सजग दृष्टि दिखाई देती है। ब्रज श्रीवास्तव की कविताएँ यह सिद्ध करती हैं कि व्यक्ति की पीड़ा केवल निजी नहीं होती, बल्कि वह सामाजिक परिस्थितियों की उपज होती है। कवि व्यक्ति के माध्यम से समाज की विडंबनाओं, नैतिक संकटों और संवेदनहीनता को उजागर करता है। इस प्रकार उनकी कविता समकालीन हिंदी कविता की उस परंपरा को आगे बढ़ाती है जिसमें कविता केवल सौंदर्य का साधन नहीं, बल्कि सामाजिक चेतना का माध्यम बन जाती है। ब्रज श्रीवास्तव की कविताएँ समकालीन समाज के यथार्थ, व्यक्ति की मानसिक संरचना और मानवीय



International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

संवेदना का संतुलित और सशक्त चित्र प्रस्तुत करती हैं। यही कारण है कि उनकी कविता का महत्व केवल साहित्यिक नहीं, बल्कि सामाजिक और वैचारिक स्तर पर भी स्वीकार्य है।

उपर्युक्त विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि ब्रज श्रीवास्तव की कविताओं में व्यक्ति-चेतना और सामाजिक सरोकारों का गहरा अंतर्संबंध है। कवि व्यक्ति के अनुभवों को सामाजिक यथार्थ से जोड़कर कविता को व्यापक मानवीय संदर्भ प्रदान करता है। इस दृष्टि से उनकी कविता समकालीन हिंदी कविता की एक सशक्त और संवेदनशील धारा का प्रतिनिधित्व करती है।

सुझाव

1. ब्रज श्रीवास्तव की कविताओं का तुलनात्मक अध्ययन अन्य समकालीन कवियों के संदर्भ में किया जा सकता है।
2. उनकी कविताओं में व्यक्ति-चेतना के दार्शनिक और मनोवैज्ञानिक पक्षों पर पृथक शोध संभव है।
3. सामाजिक सरोकारों के बदलते स्वरूप के संदर्भ में उनकी कविताओं की पुनर्व्याख्या की जा सकती है।
4. भाषा और शिल्प के प्रयोग पर केंद्रित विश्लेषणात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
5. उनकी कविताओं में मध्यवर्गीय चेतना और वैश्वीकरण के प्रभाव पर विशेष शोध किया जा सकता है।
6. ब्रज श्रीवास्तव की कविता को समकालीन सामाजिक इतिहास के दस्तावेज़ के रूप में भी देखा जा सकता है।

उपसंहार

अंततः यह कहा जा सकता है कि ब्रज श्रीवास्तव की कविताएँ व्यक्ति और समाज के जटिल संबंधों की सशक्त अभिव्यक्ति हैं। उनकी कविता व्यक्ति की चेतना को सामाजिक यथार्थ से जोड़कर मानवीय संवेदना का विस्तार करती है। समकालीन हिंदी कविता के परिदृश्य में उनका योगदान इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि वे कविता को जीवन से जोड़ते हैं और पाठक को अपने समय और समाज के प्रति सजग बनाते हैं।

संदर्भ सूची (APA, हिंदी में)

1. चतुर्वेदी, रामस्वरूप. (2010). *हिंदी साहित्य का इतिहास*. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन.
2. मिश्र, शिवमूर्ति. (2013). *समकालीन हिंदी कविता की प्रवृत्तियाँ*. इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन.
3. सिंह, नामवर. (2012). *कविता के नए प्रतिमान*. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन.
4. सिंह, केदारनाथ. (2011). *कविता और समय*. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन.
5. त्रिपाठी, रवीन्द्र. (2014). *समकालीन कविता और समाज*. नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन.
6. वाजपेयी, अशोक. (2015). *समकालीन हिंदी कविता: संदर्भ और दृष्टि*. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन.
7. शुक्ल, रामचंद्र. (2009). *हिंदी साहित्य का इतिहास*. वाराणसी: नागरी प्रचारिणी सभा.
8. वर्मा, नंदकिशोर. (2014). *आधुनिक हिंदी कविता*. नई दिल्ली: भारतीय ज्ञानपीठ.
9. तिवारी, भोलानाथ. (2012). *आधुनिक हिंदी काव्य चेतना*. वाराणसी: भारती भवन.
10. पांडेय, रामविलास. (2016). *समकालीन साहित्य विमर्श*. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन.